माँ लक्ष्मी चालीसा

॥ दोहा ॥

मातु लक्ष्मी करि कृपा,
करो हृदय में वास।
मनोकामना सिद्ध करि,
पुरवहु मेरी आस॥

॥ सोरठा ॥

यही मोर अरदास,
हाथ जोड़ विनती करुं।
सब विधि करौ सुवास,
जय जननी जगदम्बिका॥

॥ चौपाई ॥

सिन्धु सुता मैं सुमिरों तोही,
ज्ञान बुद्धि विद्या दो मोही।

तुम समान नहीं कोई उपकारी,
सब विधि पुरवहु आस हमारी।

जय जय जय जननी जगदंबा,
सबकी तुम ही हो अवलम्बा।

तुम हो सब घट घट के वासी,
विनती यही हमारी खासी।

जग जननी जय सिन्धु कुमारी,
दीनन के तुम हो हितकारी।

बिनवों नित्य तुमहिं महारानी,
कृपा करो जगजननि भवानी।

केहि विधि स्तुति करौं तिहारी,
सुधि लीजै अपराध बिसारी।

कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी,
जग जननी विनती सुन मोरी।

ज्ञान बुद्धि सब सुख की दाता,
संकट हरो हमारो जय लक्ष्मी माता।

क्षीरसिन्धु जब विष्णु मथायो,
चौदह रत्न सिन्धु में पायो।

चौदह रत्न में तुम सुखरासी,
सेवा कियो प्रभु बन दासी।

जो जो जन्म जहां प्रभु लीन्हा,
रुप बदल तहं सेवा कीन्हा।

स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा,
लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा।

तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं,
सेवा कियो हृदय पुलकाहीं।

अपनायो तोहि अन्तर्यामी,
विश्व विदित त्रिभुवन के स्वामी।

तुम सम प्रबल शक्ति नहीं आनी,
कहं लौ महिमा कहौं बखानी।

मन क्रम वचन करै सेवकाई,
मन इच्छित वाँछित फल पाई।

तजि छल कपट और चतुराई,
पूजहिं विविध भाँति मन लाई।

और हाल मैं कहौं बुझाई,
जो यह पाठ करै मन लाई।

ताको कोई कष्ट न होई,
मन इच्छित पावै फल सोई।

त्राहि-त्राहि जय दुःख निवारिणी,
ताप भव बंधन हारिणी।

जो यह पढ़ै और पढ़ावै,
ध्यान लगाकर सुनै सुनावै।

ताको कोई न रोग सतावै,
पुत्र आदि धन सम्पति पावै।

पुत्रहीन अरु सम्पति हीना,
अन्ध वधिर कोढ़ी अति दीना।

विप्र बोलाय के पाठ करावै,
शंका दिल में कभी न लावै।

पाठ करावें दिन चालीसा,
तापर कृपा करें गौरीशा।

सुख सम्पति बहुत सो पावै,
कमी नहीं काहु की आवै।

बारह मास करै जो पूजा,
तेहि सम धन्य और नहिं दूजा।

प्रतिदिन पाठ करै मन माही,
उन सम कोइ जग में कहुं नाहीं।

बहु विधि क्या मैं करौं बड़ाई,
लेय परीक्षा ध्यान लगाई।

करि विश्वास करै व्रत नेमा,
होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा।

जय जय जय लक्ष्मी भवानी,
सब में व्यापित हो गुणखानी।

तुम्हरो तेज प्रबल जग माहीं,
तुम सम कोउ दयालु कहुं नाहिं।

मोहिं अनाथ की सुध अब लीजै,
संकट काटि भक्ति मोहि दीजै।

भूल चूक करि क्षमा हमारी,
दर्शन दीजै दशा निहारी।

बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी,
तुमहि अछत दुःख सहते भारी।

नहिं मोहि ज्ञान बुद्धि है मन में,
सब जानत हो अपने मन में।

रुप चतुर्भुज करके धारण,
कष्ट मोर अब करहु निवारण।

केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई,
ज्ञान बुद्धि मोहि नहिं अधिकाई।

॥ दोहा ॥

त्राहि त्राहि दुख हारिणी,
हरो बेगि सब त्रास।
जयति जयति जय लक्ष्मी,
करो दुश्मन का नाश॥

रामदास धरि ध्यान नित,
विनय करत कर जोर।
मातु लक्ष्मी दास पै,
करहु दया की कोर॥

[1]

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज इंस्टाग्राम प्रोफाइल